डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ (स्नातक) प्रतिष्ठा
प्रथम वर्ष, प्रथमपत्र
किरातार्जुनीयम - प्रथमसर्ग
पद्यांश व्याख्या

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीम्
अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा
वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्॥१॥

अन्वय:- कृतारिषड्वर्गजयेन, अगम्यरूपां मानवीं पदवीं प्रपित्सुना, अस्ततन्द्रिणा, तेन नक्तं दिवं विभज्य, नयेन पौरुषं वितन्यते।

भाषार्थ- (कृतारिषड्वर्गजयेन) काम, क्रोध, लोभ, हर्ष, मान, मद तथा मानसिक विकाररूपी छ: शत्रुओं के समूह पर विजय प्राप्त कर (अगम्य रूपां मानवीं पदवीम्) मनु द्वारा निर्दिष्ट नीति के मार्ग को प्राप्त करने की इच्छा से (अस्ततन्द्रिणा) आलस्यरहित वह दुर्योधन (नक्तं दिनं विभज्य) दिन रात का विभाजन करके (नयेन) नीति से (पौरुषं वितन्यते) अपने पौरुष का विस्तार कर रहा है।

भावार्थ- दुर्योधन क्रोधादि पर विजय प्राप्त करके तथा आलस्य का परित्याग करके मनु के मार्ग पर चल रहा है। इस प्रकार वह अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है।

Scanned with CamScanner

पद व्याख्या – कृतारिषड्वर्गजयेन = छः शत्रुओं के समूह पर विजय प्राप्त करने वाले (उस दुर्योधन) द्वारा। षण्णां वर्गः (ष० तत्पु०), अरीणां षड्वर्गः अरिषड्वर्गः (ष० तत्पु०), कृतः अरिषड्वर्गस्य जयः येन सः कृतारिषड्वर्गजयः, तेन। (बहु०)। जि + अच् = जयः। मानवीम् = मनु द्वारा निर्दिष्ट नीति का। मनोरियं मानवी, ताम्। मनु + अण् + ङीप् स्त्रीप्रत्यय। अगाम्यरूपाम् = जिसे प्राप्त करना सरल नहीं है, जिस मार्ग पर सभी नहीं चल सकते। (पदवीम् का विशेषण) न गम्या अगम्या, ~~अगम्यरूपा~~ अतिशयेन अगम्या अगम्यरूपा। रूपप् प्रत्यय से टाप् स्त्रीप्रत्यय। पदवीम् = मार्ग, पद्यते अनया इति पदवी, पद + अवी (उणादि०) 'पद्यतिभ्यांमवि'। प्रपित्सुना – प्राप्त करने की इच्छावाले। प्रपत्तुमिच्छुः प्रपित्सुः, तेन। प्र + पद + सन् + उः कर्तरि। नक्तं दिवं विभज्य = रात और दिन बाँटकर। नक्तं च दिवा च नक्तन्दिवम् (द्वन्द्वसमास)। वि + भज + क्त्वा (ल्यप्)। अस्ततन्द्रिणा = आलस्यहीन होनेवाले उनके द्वारा अस्ता तन्द्रिः यस्य, तेन। तद् + क्रिम् उणादि। भानुजी दीक्षित के अनुसार 'द्रा' धातु 'स्पृहिगृहि' अन्त: इ। तेन पौरुषं वितन्यते = उनके द्वारा पौरुष का विस्तार किया जा रहा है। वह अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है। पौरुषम् – पुरुषस्य कर्म पौरुषम्, पुरुष + अण्। वितन्यते – वि + तन + लट्लकार कर्मवाच्य। नयेन = नीति से, नी + अच् भावे। इति।

Scanned with CamScanner